अन्तरा-शब्दशक्ति

अथाह

(काव्य संग्रह)

पूनम (कतरियार)

आगाह

(काव्य सँग्रह)

पूनम (कतरियार)

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-07-0

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या.) ०७६३३-२५३१५९ (मो)९४२४७६५२५९

अणुडाक- antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © पूनम (कतरियार)

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

Aagah by poonam katriyar

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत : प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं|

भूमिका

मानव-जीवन के परिप्रेक्ष्य में संवेगो के निरंतर ह्रास के परिणाम स्वरूप 'आगाह' का निर्माण हुआ । कभी बाहर अभाव तो कभी आंतरिक विक्षोभ से कहीं भीतर पीड़ा आलोड़ित होती रही। अक्सर अभाव में तो कभी समस्त सुख सुविधा से पूर्ण हो कर भी व्यक्ति को टूटते एवं एकाकी होते देखा है। इन सबका कारण जो भी हो, परिणाम केवल मानसिक अवसाद ही होता है। मैं कविता को केवल संत्रास की अभिव्यक्ति के रुप में देखना नहीं चाहती।मेरा मानना है कि कविता व्यक्ति को विक्षोभ और अवसाद से बचाकर जीवन में आलोक भर, उन्नयन की प्रणेता बने। कविता केवल दुःख और पीड़ा का प्रकाशन- मात्र न हो, आशा एवं उम्मीद की रोशनी भी बने।

इन्हीं सब भावनाओं की अभिव्यक्ति "आगाह" में हुई है। आशा है कि आप सुधीजन समीक्षक एवं पाठक मेरी इस प्रथम प्रस्तुति को स्वीकृति देंगे।

पुस्तक- लेखन में अपने पति श्री प्रवीण कुमार के अप्रतिम सहयोग को अनदेखा नहीं कर सकती। साथ ही, बचपन की सहेलियों तथा अपने दोनों भाईयों के प्रोत्साहन के लिए हृदय तल से धन्यवाद देती हूं।

पूनम (कतरियार)

अनुक्रमणिका

1. संवेदना 5
2. समाज 6
3. भाषा 7
4. समाज 8
5. भाषा 9
6. नहीं न 10
7. जाने क्यों 11
8. आवाज़ 12
9. दु:ख 13
10. खुशी 14
11. प्रतीक्षा 15
12. संकल्प 16

संवेदना

वास्तविकता के दहलीज पर
नहीं है तैयार भावनाएं
रोने बिलखने को,
न ही शब्दों के पिंडों में
समाहित हो, है तैयार
तर्पण को
परिस्थितियों के गर्म झंझावात
उड़ा ले जा रहे हैं उन्हें
दूर... बहुत दूर...
रोको, उन्हें रोक लो
जल और हवा की तरह
अनिवार्य हैं वे
बिना उनके ,
'बीज' नहीं हो पायेंगे उद्‍बुद्‍ध
स्फुरण प्राण का हो जायेगा अवरुद्‍ध
और,
अहं की मुट्‍ठियां भींचते रह जायेंगे हम,
संवेदनाशून्य इस रेगिस्तान में।

समाज

केवल
जंगल है बांसों का
अनगिनत लोग
सभी खोखले
चलते-फिरते बांस
मैं, तुम, यह ,वह सभी
केवल बांस रह गये हैं

हां, बनती है बांसुरी
बांसों की,
कृष्ण के अधरों की
बन सकती है शोभा
किन्तु, कहां ?
कौन रह गया है
खोखले बांसों के सिवा
कह सके जिसे कलाकार
जो काटकर ,
भर सके सुर
इन चलते-फिरते बांसों में
और,
सुनेगा भी कौन
बांसों के इस जंगल में
सुरों की धार
क्योंकि,
हैं हम सब खोखले
चलते-फिरते बांस।

भाषा

परिचित है हम भाषा से
शब्दों की,रंग-रेखाओ की,
कुछ कहते हैं आँखों की ,
तो समझते है कुछ भाव-भंगिमाओ की
किन्तु कभी नहीं समझ पाते हम
रोजी-रोटी के जुगाव्ड़ में टूटते-
बधिर व्यक्ति की भाषा
तमाम उम्र नही सुन पता जो
निःशक्त-लाचार पोपले मुख
माँ-बाप की भाषा
चक्करघिन्नी की तरह
घर बाहर नाचती
पत्नी की भाषा।
और बच्चे की तुतलाती भाषा
जो शैशव को अपने पेंसिल
से रेतता
पितृ स्वप्न भरे बैग को कंधे
से उतारते
रख देता है एक लम्बी
फेहरिस्त हाथ में उसके ......
पापा ला दो न...
नई स्कूल ड्रेस,जूते और बैग
मैगी के पैकेट,अमूल चौकलेट.....
मम्मी तो रोज कहती है
पर आज भी नही लाई।

नहीं न

आपने कहां देखा होगा,
दो जून की रोटी के लिए
अनंत भटकाव को
संकीर्ण गलियों में अनंत कतार को
बी पी एल कार्ड व राशन कार्ड में
ढूढंते अपनी पहचान को
न-न आपने कहां देखा होगा
पुरखों के हरे-भरे खेतों में
शोणित को 'सोन की धार'
बनाते इन्सानों को।
हृदय के भीतर तो केवल
रुधिर-मांस-मज्जा है आपके
नहीं,आप महसूस कर ही नहीं सकते
मन का तितली बन उड़ जाना
भावों का उद्वेलन....
सिवाय घड़ी के टिक-टिक
एवम् अलार्म के
नहीं सुना होगा आपने कभी
हवाओं का सरसराना
पत्रकों का फुसफुसाना
पंखुड़ियों का बतियाना.....
जाने क्या क्या......

जाने क्यों

बहुत करीने से मुस्कुराते हैं,
हौले से मिलते हैं।
बरबस आकर्षित कर लेते है,
जब सौम्य स्वर में कुछ कहते हैं।

राजसी डील-डौल है,
दर्प मंडित मस्तक है।
रौब-रुतबे की हनक ,
समग्र वातावरण में है।

दृष्टि-निक्षेप मात्र से कुछ
अलग - से लगते है।
हां, थोड़े से सभ्य-शहरी दिखते हैं।
जाने क्यों,

खुशियाँ कसमसाती है,
उनकी अधरों की सीमा में
वेदना छटपटाती है ,
उनके नयनों के कोरों में।

प्रमुदित हो, घर-आंगन में
झूम,नाच नहीं कर पाते है
ठठाकर हंस नहीं पाते है
बेवजह गीत नही गा पातें।

कर न पाते है चीत्कार
दिक्-दिगन्त को नहीं सुना पाते
स्वजनों के गले हिल-मिल,
मन हल्का नहीं कर पाते हैं।

सजा- संवार,सभ्यता लपेट
लिया तन में
पर जंगलीपन जाने कैसे
छूट गया फिर भी मन में
नोचकर मृदुलता को अपनी, जकड़ लिया इस चितवन में।

आवाज़

अन्तर्मन की गहराई में
सन्नाटों का जो सुराख है
उसमें गिरवी रख दिया है हमने
अपनी आवाज़।
एवज में उसके पाये है हमने
सिक्कों की खनखनाहट व
रुपये की सरसराहट से सने
खोखल हंसी।

जाने कैसे,
जरुरतें रोजमर्रा की अब
बेतरतीब बढ़ने लगी है
दो जून की रोटी
बर्गर-पिज्ज़ा में बदल गई हैं
चौमीन-पास्ता में खो गई
हलवा-जलेबियां।

संभ्रान्त कहलाने की चाहत
कुछ इतनी लम्बी हो गई है
कि, समय औ रिश्तो की चादरें
छोटी पडने लगी हैं
दिन-रात तो फर्क अपनी
पहले ही खो चुके थे
छुट्टियां-त्योहार भी अखरने लगे है

आकांक्षाओं के कालीन में
फुर्सत के लम्हे पैबन्द से लगते हैं
आत्मीयता की अनुभूति भी वहीं
अन्तर्मन की गहराई में
सन्नाटों के सूराख में खो से गए हैं।

दु:ख

सामाज्य इसका है एकछत्र
जकड़ रखा है भींचकर,
निरंतर रिस रहा है
नासूर बन चुभ रहा है
इतना सारा...इतना सारा दर्द
दु:ख, तेरे कितने नश्तर ?
हत्यारिन हो,
तू सोने नहीं देती हो
पलकों पर तैरती रहती हो
नींद - सपने - सुकून,
सबको मार डाला.

बहरुपिया हो ,
रुप बदल आती हो---
धोखा - हार.-मलाल बन
अपनो का विश्वास बनकर
कभी यम का रूप धरकर.

गांव -गांव, नगर -नगर,
गली-- गली,दर --दर
फुटपाथ से नरम बिस्तर तक
पसरी पड़ी रहती हो,
आतंक फैला रखी हो
सबको डराती हो
दु:ख, सिर्फ तुम्हीं खुश रहती हो,..

खुशी

कंपकंपाती सर्दी में लिये
धूप की उजास
जीवन को दू गर्माहट,
बनकर एक आस।

बेधड़क आती हूं,
आने दोे न पास.
स्मित के बंधन में,
बांध न तू आज।

मैं 'खुशी' हूं उच्छृंखल होकर,
फैलने दो न मुझे.
अधरो की देहरी से
निकलने दो न मुझे.

महकाऊंगी मन-आंगन,
मलय बनकर.
झंकृत करूंगी जीवन,
नवगीत-नवलय-नवछंद बनकर.

दुलार दो ना मुझे
अंजुली भर-भरकर.
विषाद के क्षण में भी,
मैं तुम्हें सहलाऊंगी.

हां, 'खुशी' हूं न मैं,
भले, इतराकर रुठ जांऊ.
पर, जीवन भर तुम्हें,
कभी छोड़ नहीं पाऊंगी

सत्य

इस असत्य जगत को
सत्य ने 'स्व' सौंप दिया
स्वयं ही स्वयं को
आवारगी में झोंक दिया.
मारामारा फिरता है

लुटा-लुटा फिरता है
निशि-वासर, द्वार-द्वार.
मन के भीतर भी,
आंगन के पार-पार.
खेतों-खलिहानों में,

दफ्तर-करखानों में.
चपरासी की खैनी में
बाबूओं के चाय-पानी में
साहब के डयोढ़ी में.
नेताओं के भाषण में

मंत्रियों के आश्वासन में.
मन्दिर- मस्जिदों में
गुरूद्वारे-मजारों में.
मुसकाती भोर आती है
छलना-आशा लेकर,

रातें ओस गिराती
सिसकती सो जाती है.
मरणासन्न अस्तित्व की
इस जीवट लड़ाई में,
एक बात तो है साहब
हमेशा सत्य, अकेला ही चलता है।

व्यथा

रूद्र का रौद्र भी अब थम गया है,
गुस्सा अन्तर्मन में जम गया है।

सावन की तरह भ्रष्टाचार लुभाने लगी है
लोगो के अन्तस् मे समाने लगी है।

बडी बडी बातों से रौब बढती है
झख मारकर सफलता सीढियां चढती है।

हमें तो ठगकर सबने बुत बना दिया
मालाओ और फूलों से लाद दिया,

कभी गांधी तो कभी अन्ना पुकार लिया,
कभी कलाम कहकर सलाम कर दिया।

अपमान का गरल पीकर हम शिव बन गये,
औऱ सम्मान की मेरी गंगा मैली हो गयी।

मेरी सिसकियां मेरे हारने की कथा है,
सही पहचाना आपने...
मै ईमानदारी हूँ औऱ, ये मेरी आज की व्यथा है।

प्रतीक्षा

प्रतीक्षा है हम सादे कागजों को
कुछ शब्दों की
सामर्थ्य हो जिनमें
सार्थक करने की हमें.
कि,
ढेर सारे कालिख़ से पाटो मत हमें
मत करो मेरे उजलेपन को जलील

गर नहीं है कालेपन के सिवाय और कुछ पास तुम्हारे
बना दो कश्ती हमें,
थमा दो किन्हीं मासूम हथेली में,
बह जायेंगे उछाह भाव में उसके.

अथवा,
सुन्दर कल्पना उसकी,
आड़ी-तिरछी रेखाएं भर देंगी.
फिर, फाड़कर फेंक देगें हमें
मानों बता देगें सहज हमें..
वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में
कितना अप्रसांगिक हो गया है
धवलता ये उजलापन हमारा
व्यर्थ है प्रतीक्षा हमारी......

सार्थक होने की
नन्हे के भोलेपन में
पा जायेंगे हम सहज ही
अपनी अर्थवता सारी।

संकल्प

अंधेरी है सुरंग
घुप्प है अंधेरा
है यह अंधेरा
बेकारी-बेगारी के
मुफलिसी-बीमारी के
वर्ण और वर्ग के
मजहब औ धर्म के
टुटन-बिखराव के
आडम्बर-दिखावे के
अशिक्षा- अनास्धा के
नैतिकता के पतन के
झूठ- बड़बोलेपन के
असह्य संवेदनहीनता के
अस्मिता के ह्रास के
घुटन - संत्रास के
भयाक्रांत उद्भ्रांत
जन जन,मन-मन है.
चल, सुरंग के देहरी पर
एक दीया जलाते है
एक एक सब जलायेंगें
श्रृंखला हम बनायेंगे
संकल्प लें उजास की
हम ही उजास फैलायेंगे।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम - पूनम (कतरियार)

जन्मस्थान - हजारीबाग(झारखण्ड)

शैक्षिक योग्यता - एम.ए. (हिन्दी साहित्य)

संप्रति - लेखन

पता - ए-43, जगत- अमरावती अपार्टमेंट, बेलीरोड़, पटना -1

प्रकाशन - रांची एक्सप्रेस, आज आदि अखबारों, ऋभु-संदेश नामक पत्रिका में कविताएं प्रकाशित। सारिका एवं धर्मयुग में कुछ विवेकपूर्ण पत्रों का प्रकाशन त्रैमासिक पत्रिका में कविताएं प्रकाशित। अनेक अखबारों एवं पत्रिकाओं में प्रकाशन जारी ।

लेखन का उद्‌देश्य :-

मुझे लगा कि लेखन में जीवन का अनुभव होना चाहिए। जीवन की व्यवहारिकता से संपृक्त साहित्य लिखना मेरा ध्येय था। मैं कम लिखूं, पर गुणवत्ता पूर्ण लिखूं। कोरी भावुकता, कल्पना की ऊँची उड़ान, विद्रोह-विरोध को भारी भरकम शब्दों में कहने की आज की प्रवृत्ति से इतर संवेदनाशील साहित्य का सृजन करना मेरा ध्येय है। कह सकते है कि, मैं साहित्य की मौन साधिका रही, जो भीड़ से दूर रहकर भी हिन्दी साहित्य की सेवा करना चाहती हूँ।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

Women आवाज़ आधी आबादी की गूँज...
www.WomenAawaz.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

978-93-88102-07-0

मूल्य 40/-

१५, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com